

## जिस्म की जरूरत-11

“चाय मेरे शॉर्ट्स पे गिरी थी... लेकिन शॉर्ट्स भी छोटी थी इसलिए मेरी जाँघों का कुछ भाग भी थोड़ा सा जल गया था। मैं सोफे से उठ खड़ा हुआ- अरे...

”  
[\[Continue Reading\]](#) ...

Story By: sameer chaudhary (sameer\_chaudhary)

Posted: Sunday, March 22nd, 2015

Categories: [पड़ोसी](#)

Online version: [जिस्म की जरूरत-11](#)

# जिस्म की जरूरत-11

चाय मेरे शॉर्ट्स पे गिरी थी... लेकिन शॉर्ट्स भी छोटी थी इसलिए मेरी जाँघों का कुछ भाग भी थोड़ा सा जल गया था।

मैं सोफे से उठ खड़ा हुआ- अरे आप लोग इसे क्यों डांट रहे हैं... ये तो बस ऐसे ही गिर गया... और हमने इसका मजाक भी उड़ा दिया इसलिए सजा तो मिलनी ही थी... आप घबराएँ नहीं... चाय गर्म नहीं थी...

मैंने हंसते हुए सबसे कहा।

‘समीर जी आप जल्दी से बाथरूम में जाइये और पानी से धो लीजिये... वरना शायद फफोले उठ जाएँ...’ इस बार रेणुका ने चिंता भरे लफ़्जों में मेरी तरफ देखते हुए कहा। उसकी आँखों में सचमुच परेशानी साफ़ साफ़ दिख रही थी।

‘हाँ हाँ समीर, जाइये और इसे धो लीजिये...’ अरविन्द भैया ने भी जोर देते हुए कहा।

‘अरे कोई बात नहीं भैया... मैं अपने कमरे पे जा ही रहा हूँ वहीं साफ़ कर लूँगा और तैयार भी हो जाऊँगा.. अब अगर वंदना के साथ नहीं गया तो पता नहीं और क्या क्या सजाएँ भुगतनी पड़ेगी।’ मैंने वंदना की तरफ देख कर झूठ मूठ का डरने का नाटक करते हुए कहा।

मेरी बात सुनकर फिर से सब हंसने लगे।

‘हम्म... बिल्कुल सही कहा आपने.. अब जल्दी से तैयार हो जाइये.. हम पहले ही बहुत लेट हो चुके हैं।’ इस बार वंदना ने शरारत भरे अंदाज़ में मुस्कराते हुए कहा और हम सबने एक बार फिर से ठहाके लगाये और मैं अपने घर की तरफ निकल पड़ा।

वैसे तो चाय ठण्डी थी लेकिन इतनी भी ठण्डी नहीं थी, मेरी जाँघों में जलन हो रही थी। मैं भागकर सीधा अपने बाथरूम में घुसा और पानी का नलका खोलकर अपने जाँघों को धोने लगा।

यह अच्छा था कि मैंने शॉर्ट्स के अन्दर जाँकी पहन रखी थी जिसकी वजह से मेरे पप्पू तक चाय की गर्माहट नहीं पहुँची थी वरना पता नहीं क्या होता.. यूँ तो गरमागरम चूतों का दीवान होता है लण्ड, लेकिन अगर शांत अवस्था में कोई गरम चीज़ गिर जाए तो लौड़े की माँ बहन हो जाती है...

खैर, अब मैंने अपना शॉर्ट्स उतार दिया और सिर्फ जाँकी में अपने पैरों और जाँघों को धोने लगा।

जब मैं अपने घर में घुसा था तो हड़बड़ाहट की वजह से न तो बाहर का दरवाज़ा बंद किया था न ही बाथरूम का... जिसका अंजाम यह हुआ कि जैसे ही मैं अपनी जाँघों को धोकर मुड़ा, मैं चौंक गया...

सामने वंदना बाथरूम के दरवाज़े पे खड़ी अपनी लाल लाल आँखें लिए हुए मुझे घूर रही थी।

‘अरे तुम कब आई?’ मैंने उसे देखते ही अपने हाथों से बाथरूम में पड़ा तौलिया खींचा और अपने कमर पे लपेटते हुए उसकी तरफ बढ़ा।

‘बस अभी अभी आई... वो मम्मी ने यह जेल भेजा है...!’ वंदना ने अपनी आँखें चुराते हुए कहा और मुड़ कर बाथरूम के दरवाज़े से सरकती हुई दूसरे कमरे की तरफ बढ़ गई।

‘अरे इसकी कोई जरूरत नहीं है... बस थोड़ी सी जलन है ठीक हो जायेगा।’ मैं भी उसके पीछे पीछे तौलिया लपेटे बढ़ गया।

बाथरूम के ठीक बगल में मेरा सोने का कमरा था, वंदना सर झुकाए बिस्तर के बगल में रखे कुर्सी पर बैठ गई। ऐसा लग रहा था मानो वो अपराध-बोध से शर्मिंदा हुए जा रही थी। इतनी चंचल और शरारती लड़की को यूँ सर झुकाए देखना मुझे अच्छा नहीं लगा और मैं उसके पास जाकर खड़ा हो गया।

‘अरे वंदना जी... अब इतना भी उदास होने की जरूरत नहीं है। तुमने कोई जान बुझ कर तो चाय नहीं गिराई न.. वो बस ऐसे ही गिर गई, इसमें उदास होने वाली क्या बात है?’ मैंने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

मेरी बात सुनकर उसने अपना सर उठाया और जब मेरी नज़र उसकी नज़र से मिली तो मेरा दिल बैठ सा गया। उसकी आँखों में आँसू थे। उसकी हिरनी जैसी बड़ी बड़ी खूबसूरत आँखें आँसुओं से डबडबा गई थीं।

एक पल को मैं हैरान सा हो गया... उसकी आँखों के पानी ने मेरी जलन से मेरा ध्यान हटा दिया था.. अब मुझे बुरा लगने लगा।

‘ओफ़ो... अब इसमें रोने की क्या बात है?’ मैंने उसका चेहरा अपनी दोनों हथेलियों में भरा और उसकी आँखों में आँखें डालकर उसे चुप कराने की कोशिश की।

लेकिन जैसे ही मैंने उसका चेहरा पकड़ कर अपनी तरफ किया, वैसे ही उसकी आँखों ने आँसुओं के दो मोती छलका दिए जो सीधे मेरे हाथों में गिरे।

मैंने जल्दी से अपने हाथों से उसके आँसू पोंछे और उसके माथे पर एक प्यार भरा चुम्बन दे दिया।

‘बेवकूफ़... ऐसे छोटी छोटी बात पर कोई रोता है क्या?’ मैंने उसे चुप कराते हुए कहा।

‘मुझे माफ़ कर दीजिये समीर जी... मैंने गुस्से में आपको तकलीफ़ दे दी।’ वंदना ने रुंधे हुए

गले से कहा और एक बार फिर उसकी आँखों से आँसू छलक पड़े।

उफ़... उसकी इस बात पे इतना प्यार आया कि दिल किया उसे गले से लगा कर सारा दर्द अपने अन्दर समेट लूँ... आज वंदना की इस हालत ने मुझे उसकी तरफ खींच लिया था।

‘अब चुप हो जाओ और चलने की तैयारी करो, मैं बस थोड़ी देर में आया!’ इतना कह कर मैंने उसे उठाया और अपने घर जाने के लिए कहा।

‘नहीं, पहले आप कहो कि आपने मुझे माफ़ कर दिया... तभी जाऊँगी मैं वरना मुझे कहीं नहीं जाना...’ अपने आँसू पोंछते हुए उसने अधिकारपूर्ण शब्दों में कहा और मेरे दोनों हाथ पकड़ लिए।

‘अरे बाबा, तुमने कोई गलती की ही नहीं तो फिर माफ़ी किस बात की? ये सब तो होता रहता है।’ मैंने उसे फिर से समझाते हुए कहा।

‘नहीं, मैं कुछ नहीं जानती.. अगर आपने मुझे माफ़ नहीं किया तो मैं फिर आपसे कभी बात नहीं करूँगी।’ उसने इतनी अदा से कहा कि बस मेरा दिल प्यार से भर गया..

‘अच्छा बाबा, मैंने आपको माफ़ किया... अब खुश?’ मैंने फिर से उसका चेहरा अपने हथेलियों में लिया और उसकी आँखों में देखते हुए कह दिया।

‘ऐसे नहीं... पहले मुझे यकीन होने दीजिये कि आपने सच में मुझे माफ़ कर दिया...’ उसने फिर से अपनी जिद भरी बातें कही।

‘तो अब तुम्हीं बताओ कि क्या करूँ जिससे तुम्हें यकीन हो जाए...’ मैंने सवाल किया।

‘अगर आपने सच में मुझे माफ़ किया है तो ये जेल मैं खुद आपके जलन वाली जगह पे लगाऊँगी, तभी मुझे यकीन होगा..’ उसने एक ही सांस में मेरी आँखों में आँखें डालकर

बिना अपनी पलकें झपकाए कहा।

वंदना की बात सुनकर एक पल के लिए तो मैं स्तब्ध हो गया... ये लड़की क्या कह रही है... कसम से कहता हूँ दोस्तो, अगर मैंने उसकी माँ रेणुका को नहीं चोदा होता तो शायद उसकी इस मांग पर मैं फूले नहीं समाता। इतनी खूबसूरत लड़की और वो चाहती थी कि वो मेरे जाँघों पे जेल क्रीम से मालिश करे... कौन मर्द ये नहीं चाहेगा कि एक बला की खूबसूरत हसीना अपने नाज़ुक नाज़ुक हाथों से उसकी मालिश करे और वो भी जाँघों पे। लेकिन पता नहीं क्यूँ मुझे अचानक से रेणुका का खयाल आने लगा.. कहीं मैं उसके विश्वास के साथ दगेबाज़ी तो नहीं कर रहा... अगर उसे पता चला तो वो क्या समझेगी.. तरह तरह के सवाल मेरे मन में आने लगे।

‘क्या हुआ... क्या सोचने लगे... देखा ना मुझे पता था कि आपने मुझे माफ़ नहीं किया...’ वंदना ने मेरा ध्यान तोड़ते हुए फिर से रोने वाली शक्ल बना ली।

‘अरे बाबा ऐसा कुछ भी नहीं है... तुम समझने की कोशिश करो, मैं यह जेल खुद ही लगा लूँगा... मैं वादा करता हूँ।’ मैंने उसे समझाते हुए कहा।

‘मुझे कुछ नहीं सुनना.. मैंने कह दिया सो कह दिया...’ उसने जिद पकड़ ली।

अब मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करूँ... मुझे इतना पता था कि अगर उसने मेरी जाँघों को छुआ तो मैं अपने ज़ज्बातों पे काबू नहीं रख नहीं सकूँगा और लण्ड तो आखिर लण्ड ही होता है... वो तो अपना सर उठाएगा ही... हे भगवन, अब आप ही कुछ रास्ता दिखाओ...!!

शायद भगवन ने मेरी सुन ली और एक रास्ता दिखा दिया... हुआ यूँ कि अचानक से बिजली चली गई और पूरे कमरे में अँधेरा छा गया...

हम दोनों एक दूसरे का हाथ थामे चुपचाप खड़े थे... कमरे में सिर्फ हमारी साँसों की आवाज़ सुनाई दे रही थी।

मैंने एक बार फिर से उसे समझाने के लिए उसके हाथों को जोर से पकड़ा और उसके चेहरे के पास अपना चेहरा ले जाकर धीरे से कहा- यह ठीक नहीं है वंदना... मान भी जाओ..देखो हमें देर भी हो रही है... और मैंने कहा न कि मैं दवा लगा लूँगा।

मैंने धीरे से फुसफुसा कर उसके कान में कहा।

मेरे बोलते वक़्त मेरी साँसें गर्म हो चुकी थीं और उसके गालों पे पड़ रही थीं। शायद इससे उसकी आग और भड़क गई और उसने भी उसी तरह फुसफुसाते हुए गर्म साँसों के साथ मेरे कान के पास अपने होंठ लाकर कहा- प्लीज समीर जी... मान जाइये, मेरी खातिर... मुझे लगेगा कि मैंने जो गलती की है उसके बदले आपकी मदद कर रही हूँ... प्लीज !  
उसने अपने साँसों की खुशबू मेरे चेहरे पे छोड़ते हुए इतने सेक्सी अंदाज़ में कहा कि मेरे तो रोम रोम सिहर उठे।

आप सबने यह महसूस किया होगा कि जब इंसान वासना की आग में गर्म हो जाता है तो उसकी फुसफुसाहट काम भावना का परिचय देती है, ऐसा ही कुछ मुझे उस वक़्त महसूस हो रहा था।

‘मैं जानती हूँ कि आपको शर्म आ रही है... लेकिन शायद ऊपरवाले ने आपकी इस समस्या का हल भी भेज दिया है.. बिजली चली गई है और पूरा अँधेरा है... अब तो आपको शर्मने की भी कोई जरूरत नहीं है.. और अगर अब भी आप चाहोगे तो मैं अपनी आँखें बंद कर लूँगी... लेकिन दवा लगाए बिना नहीं जाऊँगी।’ अपनी जिद और अपनी मंशा ज़ाहिर करते हुए उसने मुझे पूरी तरह से विवश करते हुए मुझे धीरे से बिस्तर की तरफ धकेलते हुए बिठा दिया।

अँधेरे की वजह से वो कुछ देख नहीं पायेगी, इस बात की संतुष्टि तो थी लेकिन एक और

भी डर था कि अँधेरे में उसका हाथ जाँघों से होता हुआ कहीं मेरे भूखे लंड पर गया तो फिर वंदना को चुदने से कोई नहीं बचा पायेगा... और मैं यह चाहता नहीं था क्योंकि अब तक मेरे दिमाग से रेणुका का ख्याल गया नहीं था... और पिछले 3-4 दिनों से रेणुका को चोदा नहीं था.. अरविन्द भैया की वजह से हमें मौका नहीं मिला था।

और मैं जानता था कि मेरा लंड अगर उसके छूने से जाग गया तो अपना पानी झाड़े बिना नहीं मानेगा।

इस उहापोह की स्थिति में मैंने एक फैसला किया और बिस्तर से उठ कर रसोई की तरफ गया।

मेरे अचानक यूँ उठने से वंदना को अजीब सा लगा और अँधेरे में ही उसने टटोलते हुए मेरा हाथ पकड़ कर अपनी तरफ खींचा- क्या हुआ... कहाँ जा रहे हैं आप ?

वंदना ने चिंता भरे लहजे में पूछा।

‘बस अभी आया... तुम यहीं रुको।’ मैंने अपना हाथ छुड़ाते हुए कहा और रसोई में चला गया।

पहले तो टटोलकर फ्रिज का दरवाजा ढूँढा और पानी की बोतल निकाल कर एक ही घूंट में पूरी बोतल खाली कर दी... मेरे सूखते हुए गले को थोड़ी सी राहत मिली।

फिर मैं फ्रिज के ऊपर से जैसे तैसे मोमबत्ती तलाशने लगा और किस्मत से एक मोमबत्ती मिल भी गई, वहीं पास में माचिस भी मिल गई और मैंने मोमबत्ती जला ली।

जलती हुई मोमबत्ती लेकर मैं वापस कमरे में आया और बिस्तर के बगल में रखे मेज पर उसे ठीक से लगा दिया। मोमबत्ती की हल्की सी रोशनी में वंदना का दमकता हुआ चेहरा मेरे दिल पर बिजलियाँ गिराने लगा।

कसम से कह रहा हूँ, उस वक़्त उसे देख कर ऐसा लग रहा था मानो कोई खूबसूरत सी परी सफ़ेद कपड़ों में मेरे सामने मेरा सर्वस्व लेने के लिए खड़ी हो... मैं एक पल को उसे यूँ ही निहारता रहा।



‘अब आइये भी... अब देरी नहीं हो रही क्या?’ वंदना ने शरारत से मुस्कुराते हुए मेरी तरफ देखा और मुझे बिस्तर पर आने को कहा।

‘हे ईश्वर, कुछ भूल होने से बचा लेना..’ मैंने मन ही मन भगवान से प्रार्थना की और धीरे से बिस्तर पे बैठ गया।

मैं उस वक़्त सिर्फ एक तौलिये में था सिर्फ अन्दर एक वी कट जॉकी पहनी हुई थी और ऊपर बिल्कुल नंगा था।

वंदना अब भी बिस्तर के बगल में हाथों में जेल लिए खड़ी थी।

उसने मुझे अपने पैरों को ऊपर करके सीधे लेट जाने को कहा, मैं चुपचाप उसकी बात सुनते हुए अपने पैरों को उठा कर बिल्कुल सीधा लेट गया।

उसने मुझे बिस्तर के थोड़ा और अन्दर की तरफ धकेला और फिर मेरे जाँघों के पास मुझसे बिल्कुल सट कर बैठ गई।

वंदना इस तरह बैठी कि उसका चेहरा मेरी टांगों की तरफ था और सामने मोमबत्ती जल रही थी जिस वजह से मुझे बस उसके शरीर के पीछे का हिस्सा रोशनी की वजह से सिर्फ एक आकार की तरह नज़र आ रहा था। मेरे कूल्हे और उसके कूल्हे बिल्कुल चिपके हुए थे जो अनायास ही मुझे गर्मी का एहसास करा रहे थे।

कहानी जारी रहेगी...

